The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 5 | May 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

माध्यमिक विद्यालय इन्दौर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्व तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन

सतवीर सिंह काका

ओरिएण्टल यूनिवर्सिटी, इन्दौर म.प्र., Email: sskaka13@gmail.com

डॉ0 रमनप्रीत कौर

ओरिएण्टल यूनिवर्सिटी,इन्दौर म.प्र, Email: ramanpreetkaur@orientaluniversity.in

डॉ0 शमशेर सिंह काका

श. अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय देवास म.प्र., Email: ssskaka13@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-05-2025

Published: 10-06-2025

Keywords:

व्यक्तित्व, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, शैक्षणिक उपलब्धि

ABSTRACT

विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रभित करती है यह वह स्थति है जिसमे विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) किसी की अपनी भावनाओं को पहचानने और नियंत्रित करने के साथ-साथ सहानुभूतिपूर्ण होने और दूसरों की भावनाओं के साथ काम या अध्ययनरत करने में सक्षम होने की क्षमता है। प्रस्तुत शोध में इन्दौर शहर के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्त्व तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन करने के लिए कक्षा 6टी,7वी और8 वी मे से 96 विद्यार्थियों का चयन दैव न्यादर्श एवं सर्वे विधि द्वारा किया गया | जिनकी उम्र 13 से16 वर्ष के मध्य होगी तथा ये सामान्य, अनुसूचित जाती, जनजाती एवं पिछड़ा वर्ग से सम्बन्धित कक्षावार, विषयवार, उम्रवार, लिंगावर, जातिवार, ब्यौरा आवृति एवं प्रतिशत के साथ, प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत, स्पीयर, स्वतंत्र टी – परीक्षण व द्वी वे एनोवा सांख्यिकी का

उपयोग किया गया | जिसके उद्देश माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्व एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच सहबंध एवं परस्पर अंतक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना | जिसमे शून्य परिकल्पना माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्व एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होगा | माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर वर्ग, व्यक्तित्त्व लक्षण और उनकी परस्पर अंतक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा| निष्कर्ष स्वरूप माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व बुद्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया | अर्थात जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी था उनकि बुद्धि भी उच्च पाई गयी | माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धि पर वर्गों (आरक्षित व अनारक्षित) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया | अर्थात दोनों वर्गों की बुद्धि सामान पाई गई | माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के व बुद्धि पर व्यक्तित्व स्तरों (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया | अर्थात अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया | अर्थात जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी था उनकि बुद्धि भी उच्च पाई गयी | प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा संस्थान, शिक्षको, अभिभावकों, विद्यार्थियों, लेखक एवं पाठयक्रम निर्माताओं भविष्य में विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों हेतु संशोधन, विद्यार्थियों के लिए समान अवसर प्रदान करना , विद्यार्थियों के समायोजन हेतु संशोधन के लिए भविष्य में शोध के भविष्य में शोध हेतु सुझाव प्रदान किये गये

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15658171

प्रस्तावना :- विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रभित करती है यह वह स्थति है जिसमे विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) किसी की अपनी भावनाओं को पहचानने और नियंत्रित करने के साथ-साथ सहानुभूतिपूर्ण होने और दूसरों की भावनाओं के साथ काम या अध्ययनरत करने में सक्षम होने की क्षमता है।

विद्यार्थियों कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता से तात्पर्य किसी विद्यार्थी या व्यक्ति की अपनी भावनाओं को प्रबंधित करने और नियंत्रित करने की क्षमता से है और साथ ही वह दूसरों की भावनाओं को भी नियंत्रित करने की क्षमता रखता है। दूसरे शब्दों में, वे दूसरे विद्यार्थियों व लोगों की भावनाओं को भी प्रभावित कर सकते हैं।शब्द सर्वप्रथम यले "इमोशनल इंटेलिजेंस " में प्रतिपादित किया गया परन्तु इस शब्द की प्रसिद्धि अमेरिकी 1990 विश्वविद्यालय के पीटर सलोवे और जॉन मेयर द्वारा | को जाता है 1995 वैज्ञानिक सेनियल गोलमेन

भावनात्मक बुद्धि कि परिभाषा -:

मेयर और सलोवे के अनुसार -: भावनात्मक बुद्धि भावनात्मक तथा बौद्धिक विकास को उन्नत करने की क्षमता हैं |

डेनियल गोलमेन के अनुसार -: संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति का अपने तथा दूसरों के मनोभावों को समझना और उन पर नियंत्रण रखना और अपने उदार की प्राप्ति हेतु उनका सर्वोत्तम उपयोग करना हैं |

टर्मन के अनुसार- एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धिमान होता है गिसमें वह वह अमूर्त रूप से चिन्तन करने की क्षमता रखता हैं

बुद्धि के सिद्धांत बिने का एक तत्त्व, स्पीयरमेन का द्वितत्त्व, थार्नडाईक का बहुतत्त्व, गिलफर्ड का सक्रिय उत्पादन, स्टेनबर्ग का त्रिविमीय सिद्धांत हमें बुद्धि की संरचना का ज्ञान कराते हैं | बुद्धि अमूर्त, मूर्त , सामाजिक के प्रकार की होती है |

व्यक्तित्व :- मनोवैज्ञानिक वर्तमान में व्यक्तित्व को सबसे अधिक महत्व देते हैं क्योकि व्यक्तित्व के अध्ययन कर सकते हैं, मनुष्य की कोई भी मानसिक व शारीरिक क्रिया व्यक्तित्व से पृथक नहीं हैं व्यक्तित्व वह समग्रता या योग्यता है गिससे व्यक्तित्व के सम्पूर्ण बाह्य एवं आन्तरिक गुणावगुणों सा समावेशित दिग्दर्शन होता हैं , व्यक्तिव में वे सभी मानसिक क्रियाएं सम्मिलित हैं जो गतिशील संगठन से व्यक्तित्व पर प्रभाव डालती हैं तथा यह वातावरण से भी सबंधित हैं |

आलपोर्ट के अनुसार – व्यक्तिव मनोदैहिक का गत्यात्मक संगठन हैं जो सम्पूर्ण वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता हैं|

बोरिं के अनुसार - वातावरण के साथ स्थयी एवं सामान्य समायोजन ही व्यक्तिव हैं |

व्यक्तिव के सिद्धांतजैसे शैलडनका रचना सिद्धांत जिसमे गोलाकृति, आयताकृति, लम्बाकृति है | आलपोर्ट एवं कैटिल का 16 करक व्यक्तिव, युंग का बहिर्मुखी, अन्तर्मुखी, उभयमुखी व्यक्तिव का व्यवहार करता हैं |

समस्या कथन:-

प्रस्तुत अध्ययन की समस्या यह हैं कि इन्दौर शहर के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्त्व तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन करना |

उद्देश :- प्रस्तुत अध्ययन के नि निम्मन उद्देश्य थे ...

1. माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्व एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच सहबंध ज्ञात करना |
2. माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्त्व एवं भावनात्मक बुद्धि का पता लगाना |
3. माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर वर्ग, व्यक्तित्त्व लक्षण और उनकी परस्पर अंतक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना |
4. माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विभिन्न कक्षा स्तरों के छात्र – छात्राओ (विद्यार्थियों) के शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धि माध्यों की तुलना करना |

परिकल्पनाएं :- प्रस्तुत अध्ययन में निम्मन शुन्य परिकल्पनाएँ - ...

1. माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्व एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होगा|
2. माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर वर्ग, व्यक्तित्त्व लक्षण और उनकी परस्पर अंतक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा |
3. माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विभिन्न कक्षा स्तरों के छात्र – छात्राओ (विद्यार्थियों) के शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धि माध्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा |

परिसीमाएँ :- प्रस्तुत अध्ययन में निम्म परिसीमाएँ है

1. न्यादर्श का चयन इन्दौर शहर के माध्यमिक विद्यालयों से किया जायेगा |
2. सभी विद्यार्थी हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के होगे |
3. इन्दौर शहर के माध्यमिक विद्यालयों के केवल 6 टी से 8 वी के विद्यार्थियों न्यादर्श के रूप में चयन किया गया |
4. शोध के लिए केवल माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्य प्रदेश विद्यालयों के छात्राओं का चयन किया गया |

न्यादर्श : –

प्रस्तुत अध्ययन में इन्दौर के माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 6 टी, 7वी और 8 वी मे से 96 विद्यार्थियों का चयन दैव न्यादर्श विधि द्वारा किया गया | विज्ञान विषय के विद्यार्थियों को न्यादर्श रूप में लिया गया है। जिसमें शहरी व ग्रामीण विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया है। जिनकी की उम्र 13 से 16 वर्ष के मध्य होगी तथा ये सामान्य, अनुसूचित जाती, जनजाती एवं पिछड़ा वर्ग से सम्बन्धित कक्षावार, विषयवार, उम्रवार,लिंगावर, जातिवार, ब्यौरा आवृति एवं प्रतिशत के साथ तालिका 1, 2,व 3 में दिया गया है।

तालिका – 1

विद्यार्थियों की कक्षा - आवृत्ति एवं प्रतिशत को दर्शाती तालिका

क्रमांक	कक्षा	विद्यार्थियों की संख्या	आवृत्ति	प्रतिशत
1	टी 6	34	34	35.42
2	वीं 7	34	34	35.42
3	वीं 8	28	28	29.16

तालिका – 2

विद्यार्थियों की उम्रवार - आवृत्ति एवं प्रतिशत को दर्शाती तालिका

क्रमांक	उम्रवार	आवृत्ति	प्रतिशत
1	13	23	23.96
2	14	30	31.25
3	15	32	33.33
4	16	11	11.46

तालिका – 3

विद्यार्थियों की जातिवार - आवृत्ति एवं प्रतिशत को दर्शाती तालिका

क्रमांक	जातिवार	आवृत्ति	प्रतिशत

1	आरक्षित	48	50
2	अनारक्षित	48	50

उपकरण :- प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया -

1. एस एस जलोटा व् एस .डी.कपूर द्वारा आइजेक्स माडसले पर्सनालिटी इन्वेंटरी

2.डॉ. पी.एन. मेहरोत्र शाब्दिक एवं आशाब्दिक भावात्मक बुद्धि परीक्षण (MGTI-M)

प्रदत्तों का संकलन : – दत्त संकलन हेतु शोधकर्ता ने चयनित विद्यालयां में स्वयं दत्त संकलन का कार्य पूर्ण किया। शोधर्कता ने जाकर विद्यालय के प्रधानाचार्य की अनुमति प्राप्त करने के बाद मापनी को विद्यार्थियों द्वारा भरवाया व दत्त संकलन करेगा का कार्य पूर्ण किया | वर्तमान शोध पत्र हेतु दैव न्यादर्श विधि या सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है, जिसका सम्बन्ध मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से सम्बन्ध माध्यमिक विद्यालयों के कक्ष 6टी, 7वी और 8 वी छात्रों का सर्वेक्षण, आंकड़ो का एकत्रीकरण, मूल्यांकन, विश्लेषण एवं व्याख्या के स्तर से है।

प्रदत्तों का विश्लेषण :- प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत, स्पीयर, स्वतंत्र टी – परीक्षण व द्वी वे एनोवा सांख्यिकी का उपयोग किया गया |

परिणाम एवं विवेचना:-

प्रथम शून्य परिकल्पना : - माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्व एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होगा |

तालिका – 4

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व भावनात्मक बुद्धि के माध्य, मानक विचलन व सहसम्बन्ध

चार	N	माध्य	मानक विचलन	सहसम्बन्ध
व्यक्तित्व	96	58.375	22.774	**0.218
भावनात्मक बुद्धि	96	98.354	12.368	

****01. सार्थकता के स्तर पर सार्थक –**

तालिका से सपष्ट होता हैं कि - माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्व एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माध्य व मानक विचलन क्रमशः **58.375, 22.774** व **98.354, 12.368** हैं | व्यक्तित्व व भावनात्मक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक **0.218** हैं जो कि सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक हैं अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्व एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होगा | निरस्त की जाती हैं | अतः कह सकते हैं कि माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्व एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध हैं |

द्वितीय शून्य परिकल्पना : - माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर वर्ग, व्यक्तित्त्व लक्षण और उनकी परस्पर अंतक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा |

तालिका – 5

माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के भावनात्मक बुद्धि के लिये व्यक्तित्व का 2 ग 3 कारकीय प्रारूप एनोवा सारांश

विचरण के स्त्रोत	ss	df	MSS	F
वर्ग	24	1	24	0.636
व्यक्तित्व स्तर	45547.937	2	22773.968	604.084
वर्ग X व्यक्तित्व स्तर	309.562	2	154.781	4.105
त्रुटि	3393	90	37.5	
कुल योग	49274.5	95		

सारणी 5 से स्पष्ट होता हैं कि –

- **वर्ग** के लिए **F** मूल्य **0.636** है जो कि **df (1,90)** व्यक्तित्व के लिए सार्थकता के स्तर **0.5** पर सार्थक नहीं हैं |

- **व्यक्तित्व स्तर** के लिए **F** मूल्य 604.08 हैं जो कि **df (2.90)** के लिए सार्थकता के स्तर **0.5** पर सार्थक नहीं हैं|
- **वर्ग व व्यक्तित्व स्तरों** की अन्तक्रिया के लिए **F** मूल्य **4.105** हैं जो कि **df (2.90)** के लिए सार्थकता के स्तर **0.5** पर सार्थक नहीं है |

उपरोक्त से स्पस्ट है कि माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर वर्ग, व्यक्तित्त्व लक्षण और उनकी परस्पर अंतक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं| अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर वर्ग, व्यक्तित्त्व लक्षण और उनकी परस्पर अंतक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा, निरस्त नहीं की जाती हैं | अतः यह कहा जाता हैं कि माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर वर्ग, व्यक्तित्त्व के स्तरों व इनकी अन्तर्क्रिया के प्रभाव से स्वत्रंत है |

तृतीय शून्य परिकल्पना : - माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विभिन्न कक्षा स्तरों के छात्र – छात्राओ (विद्यार्थियों) के शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धि माध्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा |

तालिका – 6

विद्यार्थी N, df, Mean, SD,व t मूल्य

विद्यार्थी	N	df	mean	मानक विचलन (SD)	t फलांक
छात्र	48	94	57.978	1.796	0.426
छात्राएं	48		98.210	1.790	

तालिका 6 से स्पष्ट होता हैं कि – छात्र विद्यार्थियों का भावनात्मक बुद्धि माध्य **57.978** तथा मानक विचलन **1.796** हैं तथा छात्राओं का भावनात्मक बुद्धि माध्य **98.210** तथा मानक विचलन **1.790** हैंजिसके परीक्षण का मूल्य **0.426** प्राप्त हुआ जों की स्वतंत्रता की कोटि (df) 94 के लिए सार्थकता के स्तर पर सार्थक नहीं हैं अतः शून्य परिकल्पना की माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विभिन्न कक्षा स्तरों के छात्र – छात्राओ (विद्यार्थियों) के शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धि माध्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा | निरस्त नहीं की जाती हैं | अर्थात कह सकते है कि माध्यमिक विद्यालय स्तर पर

विभिन्न कक्षा स्तरों के छात्र – छात्राओ (विद्यार्थियों) के शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धि के आधार पर कोई अन्तर नहीं हैं |

टिप :- द्वितीय उद्देश्य की प्राप्ति के लिए माडसले व्यक्तित्व परीक्षण द्वारा माध्यमिक विद्यालयीन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व परीक्षण कर उन्हें अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी व उभयमुखी व्यक्तित्व स्तरों में विभाजित किया गया जो तालिका 7 में दर्शाया गया हैं |

तालिका 7

विद्यार्थियों की व्यक्तिवार सूची

क्रमांक	**व्यक्तित्व**	**विद्यार्थियों की संख्या**
1	अन्तर्मुखी	29
2	बहिर्मुखी	35
3	उभयमुखी	32

शोध निष्कर्ष :- प्रस्तुत अध्ययन के निम्न मुख्य निष्कर्ष हैं –

1. माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व बुद्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया | अर्थात जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी था उनकि बुद्धि भी उच्च पाई गयी |

2. माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धि पर वर्गों (आरक्षित व अनारक्षित) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया | अर्थात दोनों वर्गों की बुद्धि सामान पाई गई |

3. माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के व बुद्धि पर व्यक्तित्व स्तरों (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया | अर्थात अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया | अर्थात जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी था उनकि बुद्धि भी उच्च पाई गयी |

शैक्षिक निहितार्थ :-

1. शिक्षकों के लिए :- विद्यार्थी के मानसिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों की जानकारी शिक्षक को समग्र रूप से होनी चाहिए | माध्यमिक विद्यालय स्तर के शिक्षकों को और अधिक महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वहन करना पड़ता हैं | क्योकि इस उम्र के विद्यार्थियों की शारीरिक समस्याओं के साथ-साथ उनकी मानसिक स्थिति, सामाजिक परिवेश व प्रष्ठभूमि और उसकी शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों को समझने का अवसर

मिलेगा एवं बालक के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने का प्रयास कर सकते हैं और वास्तविक रूप से राष्ट्र निर्माण में अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकते हैं |

2. अभिभावकों के लिए :- सामाजिक परिपेक्ष्य में विद्यालय के साथ सामंजस्य स्थापित करने की द्रष्टि एवं सर्वकालिक, सार्वभौमिक, समाज की अनुभूति के कारण विद्यालय और समाज में सामंजस्य स्थापित करना वर्त्तमान समय की प्राथमिक आवश्यकता बनती जा रही हैं और ऐसे प्रयास शुरू किये जा चुके हैं | एक आदर्श समाज की स्थापना कल्पना मानवतावादी द्रष्टिकोण के साथ जुडी हुई हैं और अभिभावकों के लिए यह जानना जरुरी हैं कि भावी राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षा के द्वार किन वि संगतियों को दूर किया जाना हैं और वह किस प्रकार सम्मेक द्रष्टिकोण अपनाकर विद्यालय और समाज की मदद कर सकता हैं | अतः एवं उसका शिक्षा का सामाजिक रूप से प्रभावित करने वाले कारकों का ज्ञान आवश्यक हैं | और ऐसा होने से समाज में अपने वास्तविक दायित्त्वों के विर्वाहन में अपनी भूमिका निभा सकता हैं |

3.विद्यार्थियों के लिए :- अपनी सामंजस्य और सहानुभूति व्यवहार के विकास में सहायक होता हैं | बालक कच्ची मिट्टी के घड़े के समान होते हैं और वातावरणीय थपेड़ों से उसमें परिपक्वता आती रहती हैं | वातावरण जिसमें कि यह स्वछन्द रूप से विचरण करता हैं | यदि पहले से ही सकारात्मक प्रभाव पैदा करने वाले कारकों से आभ्छादित कर दिया तों जाने-अनजाने दोनों माध्यमों के द्वारा उसमें परिपक्वता आएगी और सामाजिक वैमनस्यता का कोई स्थान ही नहीं रहेगा | अतः एवं शैक्षिक वातावरण को यदि पहले से ही उद्देश्यों के अनुकूल निर्मित कर लिया जाए तो उसका विद्यार्थी की सोच पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा |

4. लेखक एवं पाठयक्रम निर्माताओं के लिए :- संविधान की मंशा के अनुरूप वर्तमान शैक्षिक चुनोतिया जैसे आधार स्तर पर सार्वभौमिकरण, महिला व्यवसायीकरण शिक्षा, शिक्षा की समस्याएं उदयीमान भारत में उभरती भविष्य की संभावना जैसे – दुरवर्ती शिक्षा,सूचना सम्प्रेषण तकनीकी शिक्षा का विकेंद्रीकरण और निजीकरण जैसे समस्याओं के समाधान की दिशा में प्रभावित करने वाले कारकों की खोज एवं उनका निजीकरण जैसे समस्याओं के समाधान की दिशा में प्रभावित करने वाले कारकों की खोज एवं उनका निराकरण किया जा सकता हैं |

भविष्य में शोध हेतु सुझाव :-

प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ से भविष्य में शोध हेतु निम्न सुझाव है –

1. भविष्य में विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों हेतु संशोधन किया जा सकता हैं |

2. प्रत्येक शिक्षा संस्थान में अनिवार्य रूप से अनुसूचित जाती, जनजाति विकास अनुसंधान शोध केन्द्र होना चाहिए |(ताकि आरक्षण की समस्या को समाप्त किया जा सके|)
3. भविष्य में विद्यार्थियों के समायोजन हेतु संशोधन किया जा सकता हैं |
4. शिक्षा संस्थान जो इन्दौर में विस्थापित हैं उनके विद्यार्थी-विद्यार्थियों पर शोध करना |
5. सरकारी और निजी शिक्षा संस्थान पर शोध होना चाहिए |
6. भविष्य में विद्यार्थियों के लिए समान अवसर प्रदान किया जा सकता हैं |

उपसंहार :- विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रभित करती है यह वह स्थति है जिसमे विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) किसी की अपनी भावनाओं को पहचानने और नियंत्रित करने के साथ-साथ सहानुभूतिपूर्ण होने और दूसरों की भावनाओं के साथ काम या अध्ययनरत करने में सक्षम होने की क्षमता है। प्रस्तुत शोध में इन्दौर शहर के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्त्व तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन करने के लिए कक्षा 6टी,7वी और8 वी मे से 96 विद्यार्थियों का चयन दैव न्यादर्श एवं सर्वे विधि द्वारा किया गया | जिनकी उम्र 13 से 16 वर्ष के मध्य होगी तथा ये सामान्य, अनुसूचित जाती, जनजाती एवं पिछड़ा वर्ग से सम्बन्धित कक्षावार, विषयवार, उम्रवार,लिंगावर, जातिवार, ब्यौरा आवृति एवं प्रतिशत के साथ, प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत, स्पीयर, स्वतंत्र टी – परीक्षण व द्वी वे एनोवा सांख्यिकी का उपयोग किया गया | जिसके उद्देश माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्व एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच सहबंध एवं परस्पर अंतक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना | जिसमे शून्य परिकल्पना माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में व्यक्तित्व एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होगा | माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर वर्ग, व्यक्तित्त्व लक्षण और उनकी परस्पर अंतक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा| निष्कर्ष स्वरूप माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व बुद्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया | अर्थात जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी था उनकि बुद्धि भी उच्च पाई गयी | माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धि पर वर्गों (आरक्षित व अनारक्षित) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया | अर्थात दोनों वर्गों की बुद्धि सामान पाई गई | माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के व बुद्धि पर व्यक्तित्व स्तरों (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी) का कोई

सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया | अर्थात अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया | अर्थात जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी था उनकि बुद्धि भी उच्च पाई गयी | प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा संस्थान, शिक्षको, अभिभावकों, विद्यार्थियों, लेखक एवं पाठयक्रम निर्माताओं भविष्य में विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों हेतु संशोधन, विद्यार्थियों के लिए समान अवसर प्रदान करना , विद्यार्थियों के समायोजन हेतु संशोधन के लिए भविष्य में शोध के भविष्य में शोध हेतु सुझाव प्रदान किये गये |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. कोलमैन ए (2008). मनोविज्ञान के शब्दकोश (तीसरा संस्करण) आक्सफोर्ड ISBN 9780199534067
2. गोलेमैन, एट.एल.(2023). एक नेता क्या बनाता है? हार्वर्ड रिव्यू,76 : 92-105
3. धनी पी. (5 मार्च 2021). भावनात्मक बुधिमत्ता इतिहास मॉडल और उपाय, रिसर्च गेट यूनिवर्सिटी प्रेस
4. मेयर जेडी. सलोवी पी.करुसो डीआर (जुलाई 2004). भावनात्मक बुधिमत्ता : सिद्धांत, निष्कर्ष और निहितार्थ मनोवैज्ञानिक जांच 15 (3) : 197-215.
5. बेल्डोच एम.(1973). संचार के तीन तरीको में भावनात्मक अर्थ की अभिव्यक्ति के प्रति संवेदनशीलता
6. अर्गीले एम. (2000). सामाजिक सम्पर्क में योगदान : सामाजिक मुठभेडे , ट्रांजेक्शन पब्लिशर्स
7. .अग्रवाल, आर.एन .1968) .प्रयोगात्मक, आगरा, शांति साहित्य संयोजन गृह
8. अस्थाना ,विपिन .1985) मनोविज्ञान शोध विधिया,आगरा विनोद पुस्तक मंदिर
9. भटनागर,सुरेश .2003) शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ इंटर्नेशनल पब्लिशिंग हॉउस
10. माथुर ,एस.एस .1998) .शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर हिन्दी माध्यम कार्यालय निदेशालय
11. वर्मा आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान आगरा विनोद पुस्तक मंदिर .(1996) प्रीति एवं अन्य ,
12. पाल ,हंसराज .2008) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली वि.वि .
13. तिवारी 2-शिक्षा मनोविज्ञान भाग .(1993) .एन.ए ,लखनऊ उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
14. सिन्हासामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी नई दिल्ली नैशनल पब्ल .(1988) एवं अन्य . सी .वी ,ि◌केशन हाउस
15. शर्मा भार्गव बुक हाउस .पी.एच , आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान .(1973) .एन.एस ,
16. शर्मा 1979) .डी.जे,मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धांत आगरा पुस्तक मंदिर ,
17. पाल हिन्दी ग्रन्थ अकादमी .प्र.भोपाल म,शैक्षिक शोध .(2004) हंसराज ,

18. मुखर्जीसामाज . (1972) कमल ,िक सर्वेक्षण एवं शोध नई दिल्ली सरस्वती सदन ,

19. माथुर मंदिर अगर विनोद पुस्तक ,शिक्षा मनोविज्ञान . (1998) .एस.एस ,

20. माखीजा आगरा लक्ष्मीनारायण अग्रवाल ,मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल सांख्यिकी . (1986) गोपालकृष्ण ,

21. लुम्बामनोविज्ञान के छा . (1964) राममूर्ति ,त्र लखनऊ हिन्दी समिति सूचना विभाग

22. कौल नै दिल्ली विकास पब्लिशिंग हाउस ,शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली . (1964) बंकिम ,

23. कपिल सांख्यिकी के मूल तत्व आगरा विनोद पुस्तक मंदिर . (1992) .एच,

24. गोयल एज्युकेशन हरिजन गुडगाँव एकेडमी प्रेस . (1989) .आर.बी,

25. Buch, M.B. (Ed) (1979). Second survey of research in education, voll. II, New Delhi N.C.E.R.T.

26. Buch, M.B. (Ed) (1991). Fourth survey of research in education. Vol. II New Delhi N.C.E.R.T.